Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal (AMIERJ)
A Peer Reviewed Multidisciplinary Journal UGC Approved Journal No 48178, 48818
Impact Factor 5.18 ISSN 2278-5655

कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि में अंतर का तुलनात्मक अध्ययन

डा. (श्रीमती) रीना जैन

प्रस्तुत शोधपत्र में कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं के बालक एवं बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि में अंतर का तुलनात्मक का अध्ययन उद्देश्य था। शोधकार्य हेतु सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया। न्यादर्श हेतु मण्डला जिले की निवास तहसील की कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं के कक्षा 10 वीं में अध्ययनरत् 60 बालक एवं 60 बालिकाओं कुल 120 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया। शैक्षिक उपलब्धि ज्ञात करने के लिए उपकरण के रूप में परीक्षा परिणाम (प्राप्ताक) लिया गया । निष्कर्ष रूप में कामकाजी कामकाजी महिलाओं के शासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा दसवीं के बालक एवं बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया परन्तु गैर कामकाजी महिलाओं के शासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत बालक एवं बालिकाओं में शैक्षिक उपलब्धि में अंतर पाया गया ।

प्रस्तावना-

वर्तमान युग नित नई चुनौतियों प्रतिस्पर्धाओं व सफलताओं का युग है । प्रगति का युग है । प्राचीन काल से आज तक कई परिवर्तन हुए जिनमें सामाजिक परिवर्तन की भूमिका अत्यंत क्रांतिकारी रही है । गृहलक्ष्मी कहलाने वाली स्त्री, महिलाएँ बदलते नए आर्थिक स्वरूप, आवश्यकताओं, समय की माँग, पारिवारिक सहयोग, बढ़ते जीवन स्तर, सामाजिक स्तर आधुनिकीकरण, शिक्षा के नए नए अवसर, बदलते मूल्यों, अस्तित्व की पहचान आदि अनेक कारणों से घर की चहारदीवार से निकल हर उस क्षेत्र में पहुँचने लगी हैं जहाँ उनके लिए पहुँचना पहिले नामुमकिन नहीं तो कठिन अवश्य

था ।

घर परिवार बच्चों की देखभाल में पूर्व में उनकी केन्द्रीय भूमिका थी, उत्तरदायित्व था, पर वह अब कार्यस्थल पर कार्यों एवं पारिवारिक कार्यों में बँटने लगी । दोहरी भूमिका उनके व्यक्तित्व की विशेषता बन गई है। इस दोहरी भूमिका में सामंजस्य के आभाव होने के कारण प्राय: महिलाएँ तनाव, दबाव, अपराध बोध आदि से ग्रसित हो जाती हैं । भूमिका अंतद्र्वंद का प्रभाव उनके दिन प्रतिदिन के कार्यों पर पड़ता है | इसके फलस्वरूप वे अपने परिवार के दायित्वों का निर्वहन करना चाहकर भी किन्ही परिस्थितियों में नहीं क्र पातीं है | इसलिए बच्चों की देखभाल के लिए जो गुणवत्ता पूर्ण समय देना चाहिए उसका आभाव हो जाता है | कामकाजी होने के कारण अतिरिक्त उत्तरदायित्व सामान्यत: कहीं न कहीं उनके बच्चों के व्यक्तित्व पर प्रभाव डालता है । वहीं गैर कामकाजी महिलाएँ कार्यस्थल के कार्यों से मुक्त रहकर केवल परिवार एवं बच्चों की जिम्मेदारी निभाती हैं । अत: सामान्यत: उन्हें दोहरी भूमिका के अंतद्र्वंद का सामना नहीं करना पड़ता है इसलिए इन समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ता है |

कामकाजी महिलाये जो कि परिवार में अधिक देर के लिए बाहर रहती हैं तथा गैर कामकाजी महिलायें जो कि घर में रहती है दोनों महिलाओं के बच्चों के व्यक्तित्व में भिन्नता आना स्वाभाविक हैं | इसका प्रभाव बच्चों के शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ना स्वाभाविक प्रतीत होता है क्योंकि कामकाजी महिलायें उस पर इतना ध्यान नहीं दे पातीं हैं | यदि बच्चों को यह अनुभव है कि उनकी माताएं उनके सुखद भविष्य के लिए कार्य कर रहीं हैं तो परिस्थिति में अंतर हो जाता है | सामान्य रूप से यदि बच्चों को यह अनुभूति नहीं है तो उनका शैक्षिक जीवन बिखरने की कगार पर होता है कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं के बच्चों के सम्बन्ध में अनेकों महत्वपूर्ण अनुसन्धान हुए है उनमे से अधिकांश माताओं के कामकाजी होने का

बच्चों के विभिन्न पक्षों पर प्रभाव होना मानते हैं | इस सम्बन्ध में मोहम्मद और आनंद (2013) ने अपने अध्ययन में पाया कि कामकाजी एवं गैर कामकाजी माताओं के बच्चों की शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य सार्थक अंतर है । अलेक्जेंडर और शेट्टी (2014) ने अपने अध्ययन में पाया कि कामकाजी माताओं के पूर्वस्कूली बच्चों की व्यवहारगत समस्या तुलनात्मक रूप से गैर कामकाजी माताओं के पूर्वस्कूली बच्चों से अधिक है. खान और हसन (2012) ने अपने अध्ययन में पाया कि कामकाजी एवं गैर कामकाजी माताओं के बच्चों की जागरूकता स्तर, सहानुभूति स्तर, आत्म प्रेरणा स्तर, भावनात्मक स्थिरता और आत्म विकास स्तर में सार्थक अंतर है । विजयलक्ष्मी और बोल्बी (2007) ने अपने अध्ययन में पाया कि गैर कामकाजी माताओं के बच्चों में आत्म अवधारणा एवं उपलब्धि प्रेरणा स्तर तुलनात्मक रूप से कामकाजी माताओं के बच्चों से अधिक है । अग्रवाल, सोनाली (2016) ने अपने अध्ययन में पाया कि गैर कामकाजी माताओं के बच्चों के व्यक्तित्व विकास में समस्याएँ तुलनात्मक रूप से कामकाजी माताओं के बच्चों से अधिक हैं । प्राय: ऐसा भी देखने में आता है कि माताओं का कामकाजी या गैर कामकाजी होने वाला पक्ष उतना महत्वपूर्ण नहीं है जितना कि घर का वातावरण एवं माता पिता का बच्चों की शिक्षा के प्रति द्रष्टिकोण । यद्‌यपि शासन द्‌वारा प्रदत्त मातृत्व अवकाश एवं चाइल्ड केयर अवकाश के अच्छे परिणाम आ रहें हैं|

<u>उद्देश्य:</u>

1) कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं के बालक, बालिकाओं एवं विद्‌यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अंतर का अध्ययन ।

2) कामकाजी / गैर कामकाजी महिलाओं के बालक एवं बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि में अंतर का अध्ययन ।

परिकल्पना:

1) कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं के बालक, बालिकाओं एवं विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं होता है ।

2) कामकाजी / गैर कामकाजी महिलाओं के बालक एवं बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं होता है ।

न्यादर्श :

न्यादर्श हेतु मण्डला जिले की निवास तहसील की कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं के कक्षा 10 वीं में अध्ययनरत् 60 बालक एवं 60 बालिकाओं कुल 120 विद्यार्थियों का चयन याद्रच्छिक विधि से किया गया।

चरों की अवधारणा:-

शोध कार्य में निम्नलिखित चरों को लिया गया है-

- स्वतंत्र चर- कामकाजी / गैर कामकाजी महिलाओं के बालक / बालिकायें
- परतंत्र चर- शैक्षिक उपलब्धि
- नियंत्रित चर- कक्षा दसवीं के विद्यार्थी

उपकरण:-

शालेय अभिलेख के आधार पर कक्षा दसवीं के प्री बोर्ड परीक्षा के प्राप्तांक (परीक्षाफल)

सांख्यिकीय :-

शोधकार्यों के परिणामों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रांतिक अनुपात सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया है ।

परिणामों का विश्लेषण :-

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु परिणामों का विश्लेषण निम्नानुसार किया गया है -

तालिका क्रमांक-01

कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं के कक्षा दसवीं में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की

शैक्षिक उपलब्धि संबंधी परिणाम

समूह		संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	पी मान
बालक	कामकाजी महिला	30	38.66	16.55	1.06	>0.05
	गैर कामकाजी महिला	30	43.13	16.29		
बालिका	कामकाजी महिला	30	36.22	12.50	1.28	>0.05
	गैर कामकाजी महिला	30	32.01	12.94		
विद्यार्थी	कामकाजी महिला	60	37.44	14.59	0.05	>0.01
	गैर कामकाजी महिला	60	37.57	15.63		

स्वतंत्रता के अंश - 58/118

0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान - 2.00/1.98

0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु मान - 2.66/2.62

उपर्युक्त तालिका में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट होता है कि कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं के कक्षा दसवीं के बालकों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान क्रमशः 38.66 तथा 43.13 प्राप्त हुए हैं जिनके मध्य 4.47 का अंतर है यह अंतर सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक नहीं है क्योंकि प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान 1.06 प्राप्त हुआ जो 0.05 विश्वास के स्तर पर सार्थकता हेतु निर्धारित न्यूनतम मान 2.00 की अपेक्षा कम प्राप्त हुआ है। उपरोक्त तालिका में प्रदर्शित दोनों समूहों के मानक विचलन के मान 16.55 एवं 16.29 प्राप्त हुए हैं जो दोनों समूहों के प्राप्तांकों में असमान विचलनशीलता को प्रदर्शित कर रहे हैं। अतः उपरोक्त परिणामों

के आधार पर निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं के कक्षा दसवीं के बालकों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है। अर्थात कामकाजी महिलाओं के कार्य करने से उनके बालकों की शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

इसी प्रकार कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं के कक्षा दसवीं की बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान क्रमशः 36.22 तथा 32.01 प्राप्त हुए हैं जिनके मध्य 4.21 का अंतर है यह अंतर सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक नहीं है क्योंकि प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान 1.28 प्राप्त हुआ जो 0.05 विश्वास के स्तर पर सार्थकता हेतु निर्धारित न्यूनतम मान 2.00 की अपेक्षा कम प्राप्त हुआ है। उपरोक्त तालिका में प्रदर्शित दोनों समूहों के मानक विचलन के मान 12.50 एवं 12.94 प्राप्त हुए हैं जो दोनों समूहों के प्राप्तांकों में असमान विचलनशीलता को प्रदर्शित कर रहे हैं। अतः उपरोक्त परिणामों के आधार पर निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं के कक्षा दसवीं की बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है। अर्थात कामकाजी महिलाओं के कार्य करने से उनके बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

साथ ही कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं के कक्षा दसवीं के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान क्रमशः 37.44 तथा 37.57 प्राप्त हुए हैं जिनके मध्य 0.13 का अंतर है यह अंतर सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक नहीं है क्योंकि प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान 0.05 प्राप्त हुआ जो 0.05 विश्वास के स्तर पर सार्थकता हेतु निर्धारित न्यूनतम मान 1.98 की अपेक्षा कम प्राप्त हुआ है। उपरोक्त तालिका में प्रदर्शित दोनों समूहों के मानक विचलन के मान 14.59 एवं 15.63 प्राप्त हुए हैं जो दोनों समूहों के प्राप्तांकों में असमान विचलनशीलता को प्रदर्शित कर रहे हैं। अतः उपरोक्त परिणामों के आधार पर निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि

कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं के कक्षा दसवीं के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है। अर्थात कामकाजी महिलाओं के कार्य करने से उनके विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

तालिका क्रमांक-02

कामकाजी / गैर कामकाजी महिलाओं के अध्ययनरत् कक्षा दसवीं के बालक एवं बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि संबंधी परिणाम

समूह		संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	पी मान
कामकाजी महिला	बालक	30	38.66	16.55	0.64	>0.05
	बालिका	30	36.22	12.50		
गैर कामकाजी महिला	बालक	30	43.13	16.29	2.93	>0.01
	बालिका	30	32.01	12.94		

स्वतंत्रता के अंश - 58

0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान - 2.00

0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु मान - 2.66

उपर्युक्त तालिका में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट होता है कि कामकाजी महिलाओं के कक्षा दसवीं के बालक एवं बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान क्रमशः 38.66 तथा 36.22 प्राप्त हुए हैं जिनके मध्य 2.44 का अंतर है यह अंतर सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक नहीं है क्योंकि प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान 0.64 प्राप्त हुआ जो 0.05 विश्वास के स्तर पर सार्थकता हेतु निर्धारित न्यूनतम मान 2.00 की अपेक्षा कम प्राप्त हुआ है। उपरोक्त तालिका में प्रदर्शित दोनों समूहों के मानक विचलन के मान 16.55 एवं 12.50 प्राप्त हुए हैं जो दोनों समूहों के प्राप्तांकों में असमान विचलनशीलता को प्रदर्शित कर रहे हैं।

अतः उपरोक्त परिणामों के आधार पर निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि कामकाजी महिलाओं के कक्षा दसवीं के बालक एवं बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई अंतर नहीं है। अर्थात कामकाजी महिलाओं के कार्य करने से उनके बालक एवं बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है.

गैर कामकाजी महिलाओं के कक्षा दसवीं के बालक एवं बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान क्रमशः 43.13 तथा 32.01 प्राप्त हुए हैं जिनके मध्य 11.12 का अंतर है यह अंतर सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक है क्योंकि प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान 2.93 प्राप्त हुआ जो 0.01 विश्वास के स्तर पर सार्थकता हेतु निर्धारित न्यूनतम मान 2.66 की अपेक्षा अधिक प्राप्त हुआ है। उपरोक्त तालिका में प्रदर्शित दोनों समूहों के मानक विचलन के मान 16.29 एवं 12.94 प्राप्त हुए हैं जो दोनों समूहों के प्राप्तांकों में असमान विचलनशीलता को प्रदर्शित कर रहे हैं ।

अतः उपरोक्त परिणामों के आधार पर निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि गैर कामकाजी महिलाओं के कक्षा दसवीं के बालक एवं बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर है। गैर कामकाजी महिलाओं के शासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा दसवीं के बालकों की शैक्षिक उपलब्धि बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि की अपेक्षा अधिक है।

निष्कर्ष:-

1. कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं के कक्षा दसवीं के बालकों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया है एवं कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं के कक्षा दसवीं के बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया है एवं साथ ही कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं के कक्षा दसवीं के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया है ।

2. कामकाजी महिलाओं के कक्षा दसवीं के बालक एवं बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया है।
3. गैर कामकाजी महिलाओं के कक्षा दसवीं के बालक एवं बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया गया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

1. गैरेट, डा. हैनरी ई.-शिक्षा एंव मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग, कल्याण पब्लिसर्स, लुधियाना
2. जायसवाल, सीताराम-‘समायोजन मनोविज्ञान’ प्रथम संस्करण, 1975, ब्राह्यदत्त दीक्षित
3. कपिल, डा. एच.के., (1994) ‘अनुसंधान विधियाँ’, अस्पताल रोड, आगरा (अष्ठम संस्करण)
4. कपिल, डा. एच.के., ‘सांख्यिकी के मूल तत्व’, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा.
5. मार्डेन, स्वेट - ‘आत्मविश्वास की पूंजी प्रथम संस्करण’ डायमंड पाकेट बुक्स प्रा. लि. टी, 30 ओखला, नई दिल्ली
6. पाठक, पी.डी. - ‘शिक्षा मनोविज्ञान’ विनोद पुस्तक मंदिर, अस्पताल रोड, आगरा
7. राय, पारसनाथ, (1997-98), ‘अनुसंधान परिचय’, नवरंग आफसेट प्रिंटर्स, आगरा
8. शर्मा, आर.ए. - ‘शिक्षा अनुसंधान’, आर.लाल. बुक डिपो, मेरठ
9. अलेक्जेंडर और शेट्टी, (2014), “कामकाजी और गैर कामकाजी माताओं के पूर्वस्कूली बच्चों की व्यवहारगत समस्या का तुलनात्मक अध्ययन” वॉल्यूम 4, लर्निंग कम्युनिटी, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ एजुकेशनल एंड सोशल डेवलपमेंट.
10. मोहम्मद और आनंद, (2013), “कामकाजी और गैर कामकाजी माताओं के बालकों में बहिर्मुखी व्यक्तित्व / अंतर्मुखी व्यक्तित्व और शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य सार्थक संबंध का अध्ययन”

11. खान और हसन, (2012), "कामकाजी और गैर कामकाजी माताओं के बच्चों की जागरूकता स्तर, सहानुभूति स्तर, आत्म प्रेरणा स्तर, भावनात्मक स्थिरता और आत्म विकास स्तर में अंतर का अध्ययन" वॉल्यूम 4, इशू 4, रिसर्चर.

12. विजयलक्ष्मी और बोल्बी, (2007), "कामकाजी और गैर कामकाजी माताओं के बच्चों में आत्म अवधारणा एवं उपलब्धि प्रेरणा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन". वॉल्यूम 33, इशू 4, जर्नल ऑफ़ इंडियन अकादमी ऑफ़ एप्लाइड साइकोलॉजी.